लेव तोलस्तोय
बच्चो,
सुनो
कहानी!

लेव तोलस्तोय

बच्चो, सुनो कहानी!

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

अनुक्रम

नेकी का पाठ

महान रूसी लेखक लेव निकोलायेविच तोलस्तोय का एक ग्रामीण क्षेत्र -- यास्नाया पोल्याना -- में जन्म हुआ, वह वहीं बड़े हुए और उनके जीवन का अधिकतर भाग वहीं बीता। वह बच्चों को बहुत प्यार करते थे और उन्होंने यास्नाया पोल्याना के किसान-बालकों के लिये अनेक क़िस्से-कहानियां रचे।

तोलस्तोय ने बच्चों के लिये लिखे गये अपने इन क़िस्से-कहानियों को 'ककहरा' और 'रूसी पाठमाला' के नामों से प्रकाशित किया। इन पुस्तकों से अनेक बालकों ने पढ़ना-लिखना सीखा। तोलस्तोय ने इनमें प्राचीन साहित्य और विभिन्न राष्ट्रों के जीवन की अनेक कथाओं तथा दन्त-कथाओं को शामिल किया। प्राचीन मनीषी ईसप की सीधी-सादी और छोटी-छोटी गल्पें तो उन्हें विशेष रूप से पसन्द थीं।

ईसप की गल्पों के अनुवादों को तोलस्तोय ने कभी तो किसी कहावत ('तूफ़ान में नाव'), तो कभी लोक-कथा ('तीतर और लोमड़ी'), तो कभी साधारण जीवन की घटना ('दो दोस्त') के रूप में व्यक्त किया। उन्होंने कहानियों के कथानकों को ऐसा रूसी रंग दिया कि वे रूसी कहानियां, लेव तोलस्तोय की मौलिक रचनायें ही बन गयीं।

प्राचीन गल्पें आम तौर पर किसी नतीजे या नसीहत के साथ समाप्त होती थीं। तोलस्तोय ने इस तरह के अन्त की अवहेलना करते और यह मानते हुए कि बच्चे खुद ही इन क़िस्से-कहानियों का सार, उनकी शिक्षा को समझ जायेंगे, केवल पात्रों और इनकी गति-विधियों को ही सुरक्षित रखा है।

ईसप की कहानियों का अविकल और प्रामाणिक अनुवाद करने के लिये तोलस्तोय ने प्राचीन यूनानी भाषा सीखी, अनेक पुस्तकें पढ़ीं। ईसप के बारे में बहुत-सी दन्त-कथायें प्रचलित हैं। कुछ लोग उसे बड़ा सुखी व्यक्ति मानते हैं, क्योंकि वह तो मानो जानवरों की बोली, प्रकृति की भाषा भी समझता था। दूसरे उसे दुखी व्यक्ति मानते हैं, क्योंकि वह क्सान्फ़ नाम के एक धनी का दास था। किन्तु मुख्य बात यह है कि ईसप एक बुद्धिमान और दयालु दार्शनिक था। वह लोगों को अपने पात्रों के कार्य-कलापों पर खूब हंसने को मजबूर करता था। वे जितना अधिक हंसते थे, उतने ही ज्यादा बुद्धिमान हो जाते थे।

लेव तोलस्तोय की पुस्तक के पात्र विभिन्न हैं। इनमें लोग और देवी-देवता तथा पशु-पक्षी भी हैं। किन्तु वे कोई भी क्यों न हों, लेखक सबसे पहले तो बच्चों को ही सम्बोधित करते हैं। शायद इसीलिये कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पात्र नक़ाबपोश बालक ही हैं। जब-तब नक़ाब के ज़रा हट जाने पर अचानक बच्चों की चंचल और बुद्धिमत्तापूर्ण आंखें चमक उठती हैं। चित्रकार रोमादिन ने क़िस्से-कहानियों की इस विशिष्टता को अपने चित्रों में भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

एदुआर्द बाबायेव

घोड़ा और घोड़ी

एक घोड़ी दिन-रात खेत में चरती रहती, हल में जुता नही करती थी, जबकि घोड़ा दिन के वक़्त हल में जुता रहता और रात को चरता। घोड़ी ने उससे कहा:

"किसलिये जुता करते हो? तुम्हारी जगह मैं तो कभी ऐसा न करती। मालिक मुझ पर चाबुक बरसाता, मैं उस पर दुलत्ती चलाती।"

अगले दिन घोड़े ने ऐसा ही किया। किसान ने देखा कि घोड़ा अड़ियल हो गया है, इसलिये उसने घोड़ी को ही हल में जोत दिया।

लोमड़ी और सारस

एक लोमड़ी ने सारस को अपने यहां खाने पर बुलाया और चौड़ी तश्तरी में दलिया डालकर उसके सामने रख दिया। सारस अपनी लम्बी चोंच से कुछ भी नहीं खा पाया और लोमड़ी खुद ही सारा दलिया चाट-चाटकर खा गयी। अगले दिन सारस ने लोमड़ी को अपने घर आमन्त्रित किया और तंग मुंहवाली सुराही में शोरबा डालकर लोमड़ी के सामने पेश कर

दिया। लोमड़ी सुराही में अपनी थूथनी नहीं घुसेड़ सकी, लेकिन सारस ने अपनी पूरी गर्दन उसमें डालकर ख़ुद ही सारा शोरबा पी लिया।

बन्दरी के बच्चे

एक बन्दरी के दो बच्चे थे। एक को वह प्यार करती थी, मगर दूसरे को नहीं। एक दिन लोगों ने बन्दरों को खदेड़ना शुरू किया। बन्दरी ने झटपट अपने चहेते बच्चे को उठाया और उसे लेकर भाग चली। दूसरे बच्चे को उसने वहीं छोड़ दिया। यह बच्चा, जो बन्दरी का लाड़ला नहीं था, पेड़ों के झुरमुट में जा छिपा, लोगों की उस पर नज़र नहीं पड़ी

और वे उसके क़रीब से भागते हुए आगे निकल गये। बन्दरी इतनी उतावली में पेड़ पर चढ़ी कि उसके प्यारे बच्चे का सिर तने से टकरा गया और वह मर गया। लोगों के जाने पर बन्दरी उस बच्चे को ढूंढने गयी जिसे प्यार नहीं करती थी, किन्तु वह भी उसे नहीं मिला और वह अकेली रह गयी।

भेड़िया और गिलहरी

एक गिलहरी पेड़ की शाखाओं पर इधर-उधर फुदक रही थी कि ऊंघते हुए भेड़िये के ऊपर जा गिरी। भेड़िया उछलकर खड़ा हुआ और उसने गिलहरी को खा जाना चाहा। गिलहरी गिड़गिड़ाने और उसकी मिन्नत करने लगी:

"मुझे छोड़ दो।"

भेड़िये ने जवाब दिया:

"अच्छी बात है, मैं तुझे छोड़ दूंगा, लेकिन मुझे इतना बता दे कि तुम गिलहरियां इतनी खुश क्यों रहती हो। मैं हमेशा दुखी और उदास रहता हूं, लेकिन तुम पर नज़र डालता हूं तो तुम्हें हमेशा खेलता-कूदता पाता हूं।"

गिलहरी ने जवाब दिया:

"तुम पहले मुझे पेड़ पर जाने दो। वहां जाकर मैं तुम्हें बता दूंगी, वरना मुझे तुमसे डर लग रहा है।"

भेड़िये ने उसे छोड़ दिया। गिलहरी पेड़ पर वापस चली गयी और वहां से बोली :

"तुम इसलिये दुखी और उदास रहते हो कि दिल के बुरे हो। बुराई ही तुम्हारा दिल जलाती रहती है। हम गिलहरियां इसीलिये खुश रहती हैं कि दयालु हैं और किसी के साथ बुराई नहीं करतीं।"
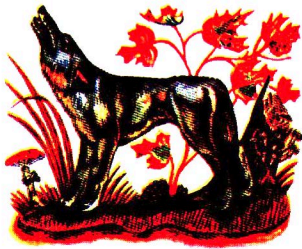
उक़ाब, कौवा और चरवाहा

चरागाह में भेड़ें चर रही थीं। अचानक कहीं से एक उक़ाब प्रकट हुआ, नीचे झपटा, उसने एक मेमने के बदन में अपने पंजे गड़ाये और उसे उड़ा ले गया। कौवे ने यह देखा और उसका भी मांस खाने को मन हो आया। उसने अपने आपसे कहा :

"यह तो बड़ा आसान काम है। मैं भी ऐसा कर सकता हूं और सो भी उक़ाब से बेहतर। उक़ाब तो बेवकूफ़ है, उसने छोटा-सा मेमना ही उठाया, लेकिन मैं वह मोटा दुम्बा उठा लूंगा।"

कौवे ने दुम्बे के बालों में अपने पंजे फंसा दिये और उसे ऊपर उठाना चाहा--लेकिन ऐसा नहीं कर सका। इतना ही नहीं, कौवे की समझ में नहीं आ रहा था कि दुम्बे के बालों में से वह ख़ुद अपने पंजे कैसे निकाले। इसी वक़्त चरवाहा आया, उसने दुम्बे के बालों में से कौवे के पंजे निकाले और उसे मारकर फेंक दिया।

दो मुर्गे और उक़ाब

दो मुर्गे गोबर के एक ढेर के क़रीब आपस में लड़ रहे थे। एक मुर्गा ज़्यादा ताक़तवर था, उसने दूसरे को हराकर गोबर के ढेर से दूर भगा दिया। सारी मुर्ग़ियां इस मुर्गे के गिर्द जमा होकर उसकी तारीफ़ करने लगीं। इस मुर्गे ने चाहा कि दूसरे अहाते में भी सभी के बीच उसकी शक्ति और ख्याति की धूम मच जाये। इसलिये वह सायबान की छत पर चढ़ गया, उसने अपने पंख फड़फड़ाये और ऊंची आवाज़ में चिल्ला उठा :

"सभी मुझे बहुत ध्यान से देखें, मैंने दूसरे मुर्गे को पीटकर भगा दिया है। दुनिया के किसी भी दूसरे मुर्गे में इतनी ताक़त नहीं है।"

मुर्गा अभी यह कह ही रहा था कि एक उक़ाब आया, उसने झपट्टा मारकर मुर्गे को नीचे गिरा दिया, उसके बदन में अपने पंजे गड़ाये और उसे अपने घोंसले में उठा ले गया।

दो राही

दो राही साथ-साथ जा रहे थे। उनमें से एक बूढ़ा और दूसरा नौजवान था। अचानक उन्होंने क्या देखा कि रास्ते में रुपयों से भरी हुई थैली पड़ी है। नौजवान ने उसे उठा लिया और बोला: "भगवान ने मुझ पर कैसी कृपा की है।"

बूढ़े ने आपत्ति करते हुए कहा: "यह तो हम दोनों की है।"

नौजवान ने उत्तर दिया:

"नहीं, यह हमें एकसाथ ही नहीं मिली है। इसे तो मैंने ही उठाया है।"

बूढ़ा चुप हो गया। ये दोनों कुछ और दूर गये। अचानक पीछे से घोड़ों के सरपट दौड़ते आने और लोगों के यह चिल्लाने की आवाजें सुनायी दीं: "रुपयों की थैली किसने चुरायी है?"

नौजवान डर गया और बोला:

"दादा, इस थैली के कारण हम पर कोई मुसीबत न आ जाये।"

बूढ़े ने जवाब दिया:

"यह थैली तो तुम्हें मिली है, हमें नहीं। इसलिये मुसीबत भी तुम पर आयेगी, हम पर नहीं।"

नौजवान को पकड़ लिया गया, उस पर मुकदमा चलाने के लिये उसे शहर ले जाया गया, जबकि बूढ़ा अपने घर चला गया।
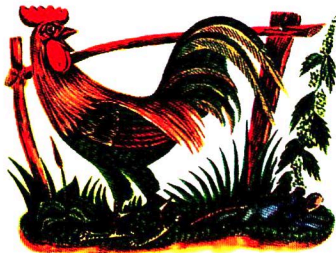
चुहिया, मुर्गा और बिल्ला

नन्ही चुहिया घूमने के लिये बाहर गयी। उसने अहाते में चक्कर लगाया और मां के पास वापस आ गयी।

"ओह अम्मां, मैंने दो जानवर देखे हैं। उनमें से एक भयानक और दूसरा दयालु है।"

मां ने पूछा :

"कैसे लगते हैं ये जानवर?"

नन्ही चुहिया ने जवाब दिया :

"उनमें से एक बड़ा भयानक है, अहाते में बड़ी अकड़

से चल रहा था -- उसके पंजे काले हैं, कलगी लाल है, आंखें के ढेले बाहर को निकले हुए हैं और नाक हुक जैसी है। जब मैं उसके पास से गुजरी तो उसने अपना बड़ा-सा मुंह खोल लिया, एक टांग ऊपर उठा ली और इतने जोर से चिल्लाया कि डर के मारे मेरी समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं कहां जाऊं।"

"यह मुर्गा है," नन्ही चुहिया की मां ने जवाब दिया। "वह किसी के साथ कभी बुराई नहीं करता, उससे डरने की जरूरत नहीं। और दूसरा जानवर कैसा है?"

"दूसरा लेटा हुआ धूप सेंक रहा था। उसकी गर्दन सफ़ेद है, पैर भूरे और नर्म-नर्म हैं। वह अपनी सफ़ेद छाती को चाट रहा था और मेरी तरफ़ देखते हुए अपनी पूंछ को धीरे-धीरे हिला रहा था।"

नन्ही चुहिया की मां कह उठी:

"अरी तू निरी बुद्धू है, बिल्कुल बुद्धू है। यही तो बिल्ला है।"

तीतर और लोमड़ी

किसी पेड़ पर तीतर बैठा था। लोमड़ी उसके क़रीब आई और बोली:

"नमस्ते, तीतर, मेरे प्यारे मित्र। जैसे ही सुनी तुम्हारी आवाज़, वैसे ही मिलने आ गयी तुम्हारे पास।"

"बड़ी मेहरबानी की है तुमने," तीतर ने जवाब दिया।

लोमड़ी ने यह ढोंग किया मानो उसे सुनाई न दे रहा हो और बोली: "तुम क्या कह रहे हो? मुझे सुनाई नहीं दे रहा। तुम अच्छे तीतर, मेरे प्यारे मित्र, घास पर घूमने, मुझसे बातें करने के लिये नीचे क्यों नहीं आ जाते? पेड़ पर से मुझे तुम्हारी आवाज़ सुनायी नहीं दे रही।"

तीतर ने जवाब दिया: "मैं घास पर आने से डरता हूं। हम परिन्दों के लिये ज़मीन पर चलना ख़तरनाक होता है।"

"तुम क्या मुझसे डरते हो?" लोमड़ी ने पूछा।

"तुमसे नहीं, दूसरे जानवरों से डरता हूं," तीतर ने उत्तर दिया। "सभी तरह के जानवर होते है।"

"नहीं, प्यारे तीतर, मेरे अच्छे मित्र, आज से यह क़ानून बना दिया गया है कि सारी पृथ्वी पर अमन-चैन होना चाहिये। आज से जानवर एक दूसरे को हानि नहीं पहुंचायेंगे।"

"यह तो बहुत अच्छा हुआ," तीतर ने जवाब दिया, "क्योंकि उधर से कुछ कुत्ते भागते आ रहे हैं। अगर पहलेवाली बात होती तो तुम्हें भागना पड़ता, लेकिन अब तुम्हारे लिये डरने की कोई बात नहीं।"

कुत्तों के बारे में सुनकर लोमड़ी के कान खड़े हो गये और वह भागने को तैयार हो गयी।

"तुम किधर चल दीं?" तीतर ने पूछा। "अब तो क़ानून बन गया है, कुत्ते तुम्हारा बाल भी बांका नहीं करेंगे।"

"कौन जाने!" लोमड़ी ने जवाब दिया। "हो सकता है कि उन्होंने क़ानून के बारे में न सुना हो।"

और दुम दबाकर भाग गयी।

भेड़िया और कुत्ता

एक दुबला-पतला भेड़िया गांव के क़रीब घूम रहा था कि उसकी एक मोटे-ताज़े कुत्ते से भेंट हो गयी। भेड़िये ने कुत्ते से पूछा :

"कुत्ते, यह बताओ कि तुम सबको खाने को कहां से मिलता है?"

कुत्ते ने जवाब दिया :

"लोग देते हैं।"

"हां, तुम लोगों के लिये अपनी बड़ी जान खपाते हो।"

कुत्ता बोला :

"नहीं, हमारा काम कुछ मुश्किल नहीं है। हमारा काम तो रातों को घर-अहाते की रखवाली करना ही है।"

"सिर्फ़ इसी काम के लिये तुम्हें इतना खिलाया-पिलाया जाता है," भेड़िये ने कहा। "तब तो मैं भी इसी वक़्त इस

काम के लिये तुम्हारे मालिक के पास जाने को तैयार हूं, वरना हम भेड़ियों को बड़ी मुश्किल से खाने को मिलता है।"

"तो जाओ," कुत्ते ने जवाब दिया, "मालिक तुम्हें भी खाने को देने लगेगा।"

भेड़िया बड़ा खुश हुआ और कुत्ते के साथ लोगों की सेवा करने चल दिया। भेड़िया फाटक में दाखिल ही हो रहा था कि उसे कुत्ते की गर्दन के बाल ग़ायब दिखाई दिये। उसने पूछा:

"कुत्ते, तुम्हारी गर्दन के बाल कैसे ग़ायब हो गये?"

"यह तो ऐसे ही," कुत्ते ने जवाब दिया।

"ऐसे ही का क्या मतलब?"

"जंजीर के कारण। बात यह है कि दिन के वक्त मैं जंजीर से बंधा रहता हूं। इस जंजीर ने ही मेरी गर्दन के कुछ बाल उड़ा दिये है।"

"तब तो मैं तुमसे विदा लेता हूं, कुत्ते," भेड़िये ने कहा। "मैं लोगों के लिये काम करने नहीं जाऊंगा। बेशक तुम्हारी तरह मोटा नहीं हो सकूंगा, लेकिन आज़ाद तो रहूंगा।"

तूफ़ान में नाव

कुछ मछुए नाव में जा रहे थे। तूफ़ान आ गया। मछुए डर गये। उन्होंने चप्पू फेंक दिये और भगवान से प्रर्थना करने लगे कि वह उनकी जान बचा दे। नाव तट से ज्यादा दूर होती हुई नदी में बढ़ी जाती थी। तब एक बुजुर्ग मछुए ने कहा:

"चप्पू किसलिये फेंक दिये? भगवान को याद करो, लेकिन नाव को तट की तरफ़ खेते रहो।"

मोटा हो जानेवाला चूहा

एक चूहा फ़र्श के तख़्तों को कुतरता रहा, फ़र्श में सूराख़ हो गया। चूहा उसमें से भीतर घुस गया और वहां उसे खाने को बहुत कुछ मिल गया। चूहा लालची था, उसने इतना अधिक खाया कि उसका पेट बेहद फूल गया। दिन निकलने पर चूहे ने अपनी जगह वापस जाना चाहा, लेकिन उसका पेट इतना फूला हुआ था कि वह सूराख़ में से नहीं गुज़र सका।

चुहिया और मेढकी

एक चुहिया किसी मेढकी के यहां मेहमान गयी। मेढकी उससे तट पर मिली और उसने उससे पानी के नीचे अपने घर चलने को कहा। चुहिया पानी में घुस गयी, लेकिन इसी वक़्त उसके भीतर इतना पानी चला गया कि मुश्किल से जिन्दा बाहर निकली।

"मेरे पास इतना वक़्त ही कहां है कि मैं दूसरों के यहां मेहमान जाती रहूं," उसने कहा।

मेढकी, चुहिया और बाज़

मेढकी और चुहिया के बीच झगड़ा हो गया। वे दोनों खुले मैदान में निकलकर लड़ने लगीं। बाज़ ने देखा कि वे उसके बारे में भूल गयी हैं, उसने झपट्टा मारा और दोनों को उठा ले गया।

गांव और शहर का चूहा

शहर में रहनेवाला एक घमंडी चूहा गांव के सीधे-सादे चूहे के यहां आया। गांव का चूहा खेत में रहता था और उसके पास जो कुछ था, उसने अपने मेहमान के सामने खाने के लिये पेश कर दिया यानी चने और गेहूं के दाने। घमंडी चूहा इन्हें कुछ देर तक चबाता रहा और फिर बोला: "तुम इसीलिये इतने दुबले-पतले हो कि तुम्हारी खुराक इतनी घटिया है। तुम मेरे यहां आकर देखो कि हम कैसे रहते-सहते है।"

तो साधारण देहाती चूहा शहरी चूहे के यहां गया। दोनों ने रात होने तक इन्तज़ार किया। लोग खा-पीकर चले गये। घमंडी चूहा अपने मेहमान को सूराख में से खाने के कमरे में ले गया और दोनों मेज़ पर चढ़ गये। देहाती चूहे ने इस तरह का भोजन अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस चीज़ से खाना शुरू करे। उसने कहा: "तुम्हारी बात सही थी, हमारी खुराक बहुत घटिया है। अब मैं भी शहर में रहने आ जाऊंगा।"

उसने इतना कहा ही था कि मेज हिली, हाथ में मोमबत्ती लिये हुए एक आदमी भीतर आया और चूहों को पकड़ने लगा। ये दोनों बड़ी मुश्किल से ही सूराख में घुसकर अपनी जान बचा पाये।

"नहीं," देहाती चूहे ने कहा, "खेत में मेरी जिन्दगी बेहतर है। बेशक मेरे यहां मिठाइयां नहीं हैं, लेकिन इस तरह का डर भी मैं कभी महसूस नहीं करता।"

समुद्र, नदियां और नाले

एक आदमी ने दूसरे से बहस करते हुए कहा कि वह बहुत ज्यादा पानी पी सकता है। वह बोला:

"मैं तो समुद्र ही पी सकता हूं।"

"नही पी सकते।"

"पी सकता हूं। बेशक शर्त लगा लो। मैं एक हज़ार रूबलों की शर्त लगाने को तैयार हूं कि पूरा समुद्र ही पी जाऊंगा।"

अगली सुबह को इस आदमी से कहा गया:

"या तो तुम जाकर सागर को पियो या एक हज़ार रूबल दो!"

इस आदमी ने जवाब दिया:

"मैंने समुद्र पीने की बात कही थी और उसे पी भी जाऊंगा। लेकिन मैंने सभी नदियां पीने को नहीं कहा था। सारी नदियों और नालों के पानी को समुद्र में जाने से रोक दो और तब मैं समुद्र को पी जाऊंगा।"

उक़ाब और लोमड़ी

एक उक़ाब ने किसी लोमड़ी से उसका बच्चा छीन लिया और उसे ले जाना चाहा। लोमड़ी मिन्नत करने लगी कि वह उस पर रहम कर दे। उक़ाब ने सोचा: "यह मेरा क्या बिगाड़ सकती है? मेरा घोंसला तो ऊंचे चीड़ वृक्ष पर है। यह मुझ तक नहीं पहुंच सकेगी।" और वह लोमड़ी के बच्चे को

ले गया। लोमड़ी भागकर मैदान में गयी, उसने लोगों से एक जलती लकड़ी ली और उसे लेकर चीड़ के नीचे पहुंच गयी। उसने चीड़ को आग लगा देनी चाही, लेकिन उक़ाब ने उससे माफ़ी मांगी और उसके बच्चे को वापस छोड़ आया।

बिल्ली और लोमड़ी

एक बिल्ली और लोमड़ी आपस में यह बात करने लगी कि कुत्तों से कैसे बचा जा सकता है। बिल्ली ने कहा :

"मैं कुत्तों से नहीं डरती हूं, क्योंकि उनसे बचने की एक तरकीब जानती हूं।"

लोमड़ी हैरान होते हुए बोली :

"सिर्फ़ एक तरकीब से ही कुत्तों से कैसे बचा जा सकता है? मैं सतहत्तर तरकीबें और चालें जानती हूं।"

ये दोनों बातें कर रही थीं कि इसी वक़्त शिकारी आ गये और कुत्ते इनका पीछा करने लगे। बिल्ली ने अपनी एक ही तरकीब से काम लिया--कूदकर पेड़ पर चढ़ गयी और कुत्ते उसे नहीं पकड़ पाये। लेकिन लोमड़ी अपनी चालें-चालाकियां दिखाने लगी जो उसकी मदद नहीं कर सकीं और कुत्तों ने उसे दबोच लिया।

बन्दर और लोमड़ी

एक बार जानवरों ने बन्दर को अपना मुखिया चुन लिया। लोमड़ी ने उसके पास जाकर कहा:

"तुम तो अब हमारे मुखिया हो, मैं तुम्हारी कुछ सेवा करना चाहती हूं—मुझे जंगल में एक ख़ज़ाना मिल गया है। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दिखा देती हूं।"

बन्दर बहुत ख़ुश हुआ और लोमड़ी के पीछे-पीछे चल दिया। लोमड़ी उसे एक फंदे के पास ले गयी और बोली:

"यह रहा ख़ज़ाना, ख़ुद ही ले लो, तुम्हारे बिना मैंने तो इसे छूना भी नहीं चाहा।"

बन्दर ने फंदे में अपना पंजा डाला और फंस गया। तब लोमड़ी भागकर गयी, सभी जानवरों को बुला लायी और बन्दर की तरफ़ इशारा करते हुए बोली:

"देखो तो, तुमने कैसा मुखिया चुना है। उसे तो ज़रा भी अक्ल नहीं है, फंदे में फंस गया है।"

बिल्ला और घंटी

एक बिल्ले के कारण चूहों का नाक में दम आ गया। वह हर दिन ही दो-तीन चूहे खा जाता था। चूहों ने अपनी सभा बुलायी और विचार करने लगे कि बिल्ले से कैसे बचें। वे सोचते रहे, सोचते रहे---मगर उनकी समझ में कोई उपाय नहीं आया।

तब एक छोटा-सा चूहा बोला :

"मैं तुम्हें बिल्ले से बचने की तरकीब बताता हूं। हम इसीलिये मारे जाते हैं कि हमें उसके अपने क़रीब आने का पता नहीं चलता। बिल्ले के गले में घण्टी बांध देनी चाहिये, ताकि वह टनटन बजती रहे। ऐसा होने पर वह जब भी हमारे क़रीब आयेगा, हमें घण्टी सुनायी दे जायेगी और हम भाग जायेंगे।"

"तेरी यह सलाह बहुत अच्छी है," एक बूढ़े चूहे ने कहा, "लेकिन बिल्ले के गले में किसी को घण्टी तो बांधनी चाहिये। तू ने तरकीब तो अच्छी सोची है, लेकिन हम तुझे तभी धन्यवाद देंगे, जब तू बिल्ले के गले में घण्टी बांध देगा।"

शेर और गधा

एक बार एक शेर शिकार के लिये निकला तो उसने गधे को अपने साथ ले लिया और उससे बोला:

"गधे, तुम जंगल में जाकर पूरे ज़ोर से रेंको। तुम्हारा गला काफ़ी बड़ा है। तुम्हारे रेंकने से जो भी जानवर डरकर भागने लगेंगे, मैं उन्हें झपट लूंगा।"

गधे ने ऐसा ही किया। वह ख़ूब ज़ोर से रेंकने लगा और जानवर अपनी सुध-बुध भूलकर दौड़ने लगे। शेर उनका शिकार कर लेता था। शिकार ख़त्म होने पर शेर ने गधे से कहा:

"शाबाश है तुम्हें, तुम ख़ूब रेंकते रहे।"

तब से गधा इसी तरह रेंकता और यह इन्तज़ार करता रहता है कि कोई उसकी तारीफ़ करे।

भेड़िया और लोमड़ी

एक भेड़िया कुत्तों से बचकर भाग रहा था और उसने एक खड्ड में छिप जाना चाहा। खड्ड में एक लोमड़ी बैठी थी। उसने भेड़िये को अपने दांत दिखाते हुए कहा :

"मैं तुझे यहां नहीं आने दूंगी---यह मेरी जगह है।"

भेड़िये ने उससे बहस न करके सिर्फ़ यही जवाब दिया :

"अगर कुत्ते इतने नज़दीक न होते तो मैं तुझे बताता कि यह किसकी जगह है। लेकिन अब तो शायद तेरी बात ही ठीक है।"

लोमड़ी और भेड़िया

पिस्सुओं ने एक लोमड़ी का बुरा हाल कर डाला। उसने पिस्सुओं से पिंड छुड़ाने की एक तरकीब सोची। वह नदी पर गयी और बहुत धीरे-धीरे अपनी पूंछ पानी में डालने लगी। पिस्सू उसकी पूंछ से उछलकर उसकी पीठ पर आ गये। तब लोमड़ी अपनी पिछली टांगों को पानी में डालने लगी। पिस्सू उसकी पीठ पर और आगे-आगे, गर्दन तथा सिर पर जाने लगे। लोमड़ी और अधिक गहराई में चली गयी और सिर्फ़ उसका सिर ही बाहर दिखाई देता रह गया। सारे पिस्सू उसके थूथन पर जमा हो गये। तब लोमड़ी ने पानी में डुबकी लगा दी। पिस्सू तट पर भाग गये और लोमड़ी दूसरी जगह पर पानी से बाहर आ गयी।

भेड़िये ने यह सब देखा और इसी चीज़ को और भी बेहतर ढंग से करना चाहा। भेड़िये ने फ़ौरन नदी में छलांग लगा दी, गहरी डुबकी लगायी और यह सोचकर देर तक पानी में बैठा रहा कि उसके बदन पर चिपके हुए सारे पिस्सू मर जायेंगे। वह पानी से बाहर निकला तो सारे पिस्सू फिर से सजीव हो उठे और उसे काटने लगे।

किसान और क़िस्मत

एक किसान चरागाह में घास काटने गया और सो गया। इसी वक्त क़िस्मत वहां आयी। उसने किसान को सोते देखकर कहा:

"यह काम करने के बजाय सो रहा है, अच्छे मौसम के दौरान घास जमा नहीं कर पायेगा और बाद में मुझे दोष देगा। यह कहेगा: "मेरी क़िस्मत अच्छी नहीं।"

बालिका और व्याध-पतंग

एक बालिका ने व्याध-पतंग पकड़ लिया और उसकी टांगें तोड़ डालनी चाही। बालिका के पिता बोले:

"पौ फटने पर यही व्याध-पतंग गाते हैं।"

बालिका को उनका गाना याद आ गया और उसने व्याध-पतंग को छोड़ दिया।

साही और विषहीन सांप

एक साही विषहीन सांप के पास गई और बोली:

"भैया, मुझे कुछ देर के लिये अपने बिल में रह लेने दे।"

विषहीन सांप ने उसे अपने बिल में आ जाने दिया। साही के बिल में आते ही विषहीन सांप के बच्चों का जीना हराम हो गया। विषहीन सांप ने उससे कहा:

"मैंने तुझे कुछ देर के लिये बिल में आने दिया था। अब तू यहां से चली जा, मेरे बच्चों को तेरे कांटे चुभते हैं और उन्हें दर्द होता है।"

साही ने जवाब दिया:

"जिन्हें दर्द होता है, वे यहां से चले जायें, मेरे लिये तो यहां ही बड़ा मज़ा है।"

कौवा और घड़ा

कौवा पानी पीना चाहता था। अहाते में पानी का घड़ा रखा था, लेकिन सिर्फ़ उसके तल में ही पानी था। कौवे के लिये उसे पीना संभव नहीं था। वह घड़े में कंकड़ डालने लगा और उसने इतने कंकड़ डाल दिये कि पानी ऊपर आ गया और उसने उसे पी लिया।

पक्षी

किसी पेड़ की शाखा पर एक पक्षी बैठा था। नीचे घास में एक दाना पड़ा था। पक्षी ने मन में सोचा:

"मैं नीचे जाकर इसे चुग लेता हूं।"

वह नीचे गया और जाल में फंस गया।

"यह भी कोई बात हुई?" पक्षी कह उठा। "बाज़ तो जिन्दा पक्षियों को पकड़ लेते हैं और उन्हें कुछ नहीं होता, लेकिन मैं सिर्फ़ एक दाने के लिये ही मुसीबत में फंस गयी।"

झूठा लड़का

एक लड़का भेड़ों का रेवड़ चराता था। उसने मानो यह मानते हुए कि उसे भेड़िया दिखाई दिया है, चिल्लाना शुरू किया:

"मदद करो, भेड़िया आ गया, भेड़िया आ गया!"

किसान भागकर आये और उन्होंने देखा कि लड़के ने झूठ बोला है। लड़के ने दो-तीन बार ऐसे ही किया और अगली बार सचमुच ही भेड़िया आ गया।

लड़का चिल्लाने लगा:

"जल्दी से भागकर आओ, जल्दी से, भेड़िया आ गया!"

किसानों ने सोचा कि वह पहले की तरह इस बार भी उन्हें धोखा दे रहा है और इसलिये कोई भी उसकी मदद को नहीं आया। भेड़िये ने देखा कि उसके लिये डरने की कोई बात नहीं है और उसने सारी भेड़ें मार डालीं।

चींटी और कबूतरी

एक चींटी को प्यास लगी तो वह नदी-तट पर गयी। इसी वक़्त ज़ोर की लहर आयी और वह डूबते-डूबते बची। एक कबूतरी चोंच में एक शाखा लिये हुए उड़ी चली जा रही थी। उसने देखा कि चींटी डूब रही है—उसने उसे बचाने के लिये शाखा नीचे फेंक दी। चींटी उस पर चढ़ गयी और इस तरह उसकी जान बच गयी। कुछ समय बाद एक शिकारी ने कबूतरी को पकड़ने के लिये जाल बिछाया। चींटी रेंगती हुई शिकारी के पास गयी और उसने ज़ोर से उसकी टांग को काटा—शिकारी दर्द से चिल्ला उठा, उसके हाथ से जाल छूट गया। कबूतरी ने पंख फड़फड़ाये और उड़ गयी।

कौवा और कबूतर

एक कौवे ने यह देखा कि कबूतरों को खूब अच्छी तरह से खिलाया-पिलाया जाता है। उसने अपने को सफ़ेद रंग से रंग लिया और कबूतरखाने में चला गया। कबूतरों ने शुरू में यह सोचा कि वह उनके जैसा ही कबूतर है और उसे अपने दरबे में आ जाने दिया। लेकिन कौवा यह भूलकर कि वह कबूतर बना हुआ, कौवे की तरह ही कांय-कांय करने लगा। तब कबूतरों ने चोंच मार-मारकर उसे भगा दिया। कौवा अपने कौवों के बीच वापस लौटा, लेकिन कौवे यह देखकर कि वह सफ़ेद रंग का है, उससे डर गये और उन्होंने भी उसे दूर भगा दिया।

कछुआ और उक़ाब

एक कछुआ उक़ाब की मिन्नत करने लगा कि वह उसे उड़ना सिखा दे। उक़ाब ने उसे समझाया कि हवा में उड़ना कछुओं का काम नहीं। लेकिन कछुआ लगातार उसकी मिन्नत करता रहा। तब उक़ाब उसे अपने पंजों में उठाकर आकाश में ले गया और हवा में छोड़ दिया। कछुआ पत्थरों पर गिरा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये।

गधा और घोड़ा

एक आदमी के पास एक गधा और एक घोड़ा था। वे सड़क पर चले जा रहे थे। गधे ने घोड़े से कहा:

"मुझ पर बहुत ज्यादा बोझ लदा हुआ है। मैं इसे ले जा नहीं पाऊंगा, थोड़ा-सा तू ले।"

घोड़े ने उसकी बात नहीं मानी। बहुत ज्यादा बोझ की वजह से गधा गिरकर मर गया। मालिक ने गधे की पीठ पर लदा हुआ सारा बोझ और साथ ही गधे की खाल भी घोड़े की पीठ पर लाद दी। तब घोड़े ने दुखी होते हुए कहा:

"ओह, मैं बेचारा, किस्मत का मारा! मैंने गधे का थोड़ा-सा बोझ भी अपनी पीठ पर नहीं लेना चाहा था और अब मुझे उसका सारा बोझ और साथ ही उसकी खाल भी ले जानी पड़ रही है।"

शेर और चूहा

एक शेर सो रहा था। एक चूहा उसके बदन पर से भाग गया। शेर जाग उठा और उसने चूहे को पकड़ लिया। चूहा उसकी मिन्नत करने लगा कि वह उसे छोड़ दे। चूहे ने कहा :

"अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं भी कभी तुम्हारे काम आ जाऊंगा।"

शेर यह सुनकर हंस पड़ा—भला चूहा उसके किस काम आ सकता है। फिर भी उसने चूहे को छोड़ दिया।

कुछ समय बाद शिकारियों ने शेर को पकड़ लिया और रस्सों से उसको पेड़ के साथ बांध दिया। चूहे ने शेर को दहाड़ते सुना तो भागते हुए वहां पहुंचा और दांतों से रस्सों को काटकर शेर को आज़ाद कर दिया।

"तुम्हें याद है न कि मेरे यह कहने पर कि मैं भी कभी तुम्हारे काम आ सकता हूं, तुम हंस पड़े थे? लेकिन अब देख रहे हो न कि चूहा भी कोई नेकी कर सकता है!"

किसान औरत और मुर्ग़ी

एक मुर्ग़ी हर दिन एक अंडा देती थी। उसकी मालकिन ने सोचा कि अगर वह उसे ज्यादा ख़ुराक देने लगे तो मुर्ग़ी हर दिन दो अंडे देने लगेगी। उसने ऐसा ही किया। मुर्ग़ी बेहद मोटी हो गयी और उसने अंडे देना बिल्कुल ही बन्द कर दिया।

मुर्ग़ी और सोने के अंडे

किसी एक आदमी की मुर्ग़ी सोने के अंडे देती थी। उसने एक बार ही बहुत-सा सोना हासिल करना चाहा और यह मानते हुए कि मुर्ग़ी के भीतर सोने का बहुत बड़ा डला है, उसे मार डाला। लेकिन भीतर से यह मुर्ग़ी बाक़ी मुर्ग़ियों जैसी ही थी।

कुत्ता, मुर्गा और लोमड़ी

एक कुत्ता और मुर्गा यात्रा के लिये चल दिये। रात होने पर मुर्गा पेड़ पर चढ़कर सो गया और कुत्ता इसी पेड़ के नीचे उसकी जड़ों के बीच। पौ फटने पर मुर्गे ने बांग दी। लोमड़ी ने मुर्गे की बांग सुनी तो भागती हुई पेड़ के पास आयी और उससे अनुरोध करने लगी कि वह नीचे आ जाये, क्योंकि वह उसकी इतनी अच्छी आवाज के लिये उसके प्रति अपना आदर प्रकट करना चाहती है। मुर्गे ने जवाब दिया:

"पहले तो चौकीदार को जगाना चाहिये, वह जड़ों के बीच सो रहा है। उसके जाग जाने पर मैं नीचे आ जाऊंगा।"

लोमड़ी चौकीदार को ढूंढने और भूंकने लगी। इसी वक्त कुत्ता बड़ी फुर्ती से उछलकर खड़ा हुआ और उसने लोमड़ी को दबोच लिया।

गन्धमार्जार

एक गन्धमार्जार ठठेरे के यहां जाकर रेती को चाटने लगा। उसकी ज़बान से लहू बहने लगा। लेकिन गन्धमार्जार यह समझते हुए कि रेती से लहू निकल रहा है, बहुत खुश हुआ लगातार उसे चाटता रहा और इस तरह अपनी ज़बान से पूरी तरह ही हाथ धो बैठा।

शेर, भालू और लोमड़ी

एक शेर और एक भालू को कहीं से मांस का एक बड़ा टुकड़ा मिल गया और वे दोनों इसके लिये लड़ने लगे। न तो भालू और न शेर ही उसे छोड़ने को तैयार था। वे दोनों इतनी देर तक लड़ते रहे कि बेहद थक गये और आराम करने के लिये लेट गये। लोमड़ी ने उनके बीच मांस का टुकड़ा पड़ा देखा तो उसे झपट लिया और भाग गयी।

भेड़िया और बुढ़िया

एक भूखा भेड़िया अपने लिये खुराक ढूंढ़ रहा था। गांव के छोर पर उसने एक झोंपड़े में लड़के को रोते और बुढ़िया को यह कहते सुना :

"अगर तू रोना बन्द नहीं करेगा तो मैं तुझे भेड़िये को दे दूंगी।"

भेड़िया वहीं रुककर इन्तज़ार करने लगा कि लड़का कब उसे मिलता है। इन्तज़ार करते-करते रात हो गयी और उसने बुढ़िया को फिर से यह कहते सुना :

"रो नहीं, मेरे बच्चे! मैं तुझे भेड़िये को नहीं दूंगी और अगर वह आयेगा तो हम फ़ौरन उसे मार डालेंगे।"

भेड़िये ने सोचा: "लगता है कि यहां कथनी एक तथा करनी दूसरी है।" और वह गांव से दूर भाग गया।

व्याध-पतंग और चींटियां

पतझड़ में चींटियों का गेहूं भीग गया और वे उसे सुखाने लगीं। भूखे व्याध्र-पतंग ने उनसे खाने को गेहूं मांगा। चींटियों ने उससे पूछा:

"तूने गर्मियों में अपने लिये खुराक क्यों जमा नहीं की?"

व्याध-पतंग ने उत्तर दिया:

"फ़ुरसत नहीं थी — मैं गाने गाता रहा।"

चींटियां हंस पड़ीं और बोलीं:

"अगर तू गर्मियों में गाने गाता रहा तो अब जाड़े में नाचता रह।"

मेढकी और शेर

शेर ने मेढकी को बहुत ज़ोर से टरटराते सुनकर यह सोचा कि ज़रूर कोई बहुत बड़ा जानवर है जो ऐसे शोर मचा रहा है। वह कुछ देर तक इन्तज़ार करता रहा और तब उसने एक मेढकी को दलदल में से बाहर आते देखा। शेर ने अपने पंजे से उसे कुचल डाला:

"देखो तो ज़रा-सी मेढकी ने ही मुझे डरा दिया।"

भेड़िया और सारस

एक भेड़िये के गले में हड्डी फंस गयी और वह किसी तरह भी उसे निकाल नहीं सका। तब उसने सारस को बुलाकर कहा :

"सुन, सारस, तेरी गर्दन बड़ी लम्बी है, तू उसे मेरे मुंह में डालकर चोंच से हड्डी बाहर निकाल ले। इसके लिये मैं तुझे इनाम दूंगा।"

सारस ने भेड़िये के मुंह में गर्दन घुसेड़कर हड्डी निकाल ली और बोला :

"तो अब दे इनाम।"

भेड़िये ने दांत किटकिटाये और जवाब दिया :

"तेरे लिये क्या इतना ही इनाम कम है कि जब तेरी गर्दन मेरे दांतों के बीच थी तो मैंने उसे काट नहीं लिया?"

नौकरानियां और मुर्ग़ा

एक गृह-स्वामिनी अपनी नौकरानियों को रात को ही जगा देती और जैसे ही मुर्ग़ा बांग देता, वैसे ही उन्हें काम में जुटा देती। नौकरानियों को यह अच्छा नहीं लगता था और इसलिये उन्होंने मुर्ग़े को मार डालने का इरादा बनाया, ताकि वह मालकिन को जगाया न करे। उन्होंने उसे मार डाला, लेकिन इससे उनकी हालत और भी ख़राब हो गयी। मालकिन इस डर से कि कहीं देर तक सोती न रह जाये, और भी जल्दी उठने तथा नौकरानियों को पहले से भी जल्दी जगाने लगी।

कुत्ता और उसकी परछाईं

एक कुत्ता तख्ते पर चलते हुए नदी को लांघ रहा था और उसके मुंह में मांस का टुकड़ा था। पानी में उसे अपनी परछाईं नज़र आयी और उसने सोचा कि एक दूसरा कुत्ता मांस लिये जा रहा है। उसने मांस का अपना टुकड़ा फेंक दिया और उस दूसरे कुत्ते के मुंह से मांस छीनने के लिये उस पर झपटा। लेकिन वहां न तो कुत्ता था और न मांस ही। इसी बीच उसके मांस को लहर बहा ले गयी।

इस तरह यह कुत्ता मांस के बिना ही रह गया।

हिरन और हिरौटा

एक बार एक हिरौटे ने हिरन से कहा:

"दादा, तुम तो कुत्तों से कहीं बड़े और ज्यादा फुरतीले भी हो। इसके अलावा तुम्हारे इतने बड़े-बड़े सींग हैं जिनसे तुम अपनी रक्षा कर सकते हो। फिर तुम कुत्तों से इतना अधिक क्यों डरते हो?"

हिरन हंस पड़ा और बोला:

"तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो, मेरे बच्चे। मुसीबत सिर्फ़ इतनी है कि मैं जैसे ही कुत्तों की भूंक सुनता हूं, वैसे ही कुछ सोचे बिना भागने लगता हूं।"

लोमड़ी और अंगूर

एक लोमड़ी ने पके हुए अंगूरों के गुच्छे लटकते देखे। वह उन्हें खाने के लिये किसी तरह से तोड़ने की कोशिश करने लगी।

वह बहुत देर तक कोशिश करती रही, मगर सफल नहीं हुई। अपनी इस निराशा को दूर करने के लिये उसने यह कहकर दिल को तसल्ली दी:

"ये तो खट्टे हैं।"

मुर्ग़ी और अबाबील

एक मुर्ग़ी को सांप के अंडे मिल गये। वह उन्हें सेने लगी। अबाबील ने यह देखा और बोली :

"कैसी बुद्धू है री, तू! तू इन्हें अंडों से बाहर निकालेगी और ये बड़े होने पर सबसे पहले तुझे ही डसेंगे।"

गधा और शेर की खाल

किसी गधे ने शेर की खाल ओढ़ ली और सभी ने यह समझा कि वह शेर है। लोग और जानवर डरकर भागने लगे। जोर की हवा चली तो शेर की खाल ऊपर को उठ गयी और उसके नीचे गधा नज़र आने लगा। लोग भागते हुए आये और उन्होंने उसे पीट-पीटकर उसका
बुरा हाल कर दिया।

बाग़बान और उसके बेटे

एक बाग़बान ने यह चाहा कि वह अपने बेटों को अच्छी तरह से बाग़बानी करना सिखा दे। जब उसका मरने का वक़्त आया तो उसने बेटों को अपने पास बुलवाकर उनसे कहा:

"मेरे बेटो, मेरा देहान्त हो जाने के बाद तुम अंगूरों के बगीचे में जो कुछ छिपा है, उसे ढूंढ़ लेना।"

बेटों ने सोचा कि वहां कोई ख़ज़ाना छिपा हुआ है। पिता के मर जाने के बाद वह उसे ढूंढ़ने लगे और उन्होंने सारा बगीचा खोद डाला। ख़ज़ाना तो उन्हें नहीं मिला, लेकिन उन्होंने बगीचे को इतनी अच्छी तरह से खोद दिया कि वहां पहले से कहीं ज़्यादा उपज होने लगी और वे अमीर हो गये।

लोमड़ी और बकरा

एक बकरे को बहुत ज़ोर की प्यास लगी। वह ढाल से नीचे उतरकर कुएं पर चला गया, उसने छककर पानी पी लिया और इसके परिणामस्वरूप बहुत भारी हो गया। वह ढाल पर वापस चढ़ने लगा, मगर ऐसा नहीं कर पाया और मिमियाने लगा। लोमड़ी ने उसे देखा और बोली:

"तेरे साथ ऐसा ही होना चाहिये था, उल्लू! अगर तेरे दिमाग़ में उतनी ही अक्ल होती जितने तेरी दाढ़ी में बाल हैं तो तूने नीचे उतरने से पहले यह सोचा होता कि वापस कैसे जायेगा।"
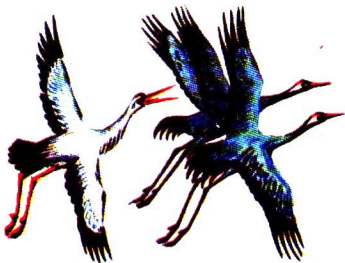
सारस और लक़लक़

किसी किसान ने सारसों को पकड़ने के लिये जाल बिछाया, क्योंकि वे उसके द्वारा बोये गये बीजों को खा जाते थे। जाल में सारस और उनके साथ एक लक़लक़ भी फंस गया।

लक़लक़ ने किसान से कहा:

"तुम मुझे तो छोड़ दो, क्योंकि मैं सारस नहीं, लक़लक़ हूं। हम तो सबसे ज्यादा सम्मानित पक्षी हैं। मैं तो तुम्हारे
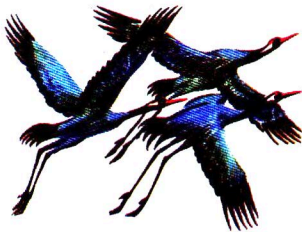
पिता के घर की छत पर रहता हूं। फिर मेरे पंखों से भी यह स्पष्ट है कि मैं सारस नहीं हूं।"

किसान ने जवाब दिया:

"मैंने तुझे सारसों के साथ पकड़ा है और उन्हीं के साथ तुम्हारी गर्दन भी काटूंगा।"

मछुआ और मछली

किसी मछुए ने एक मछली पकड़ ली। मछली बोली:

"मछुए, मुझे पानी में वापस छोड़ दो। देखते हो न कि मैं कितनी छोटी-सी हूं। तुम्हें मुझसे कोई ख़ास फ़ायदा नहीं होगा। अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो कुछ समय बाद मैं बड़ी हो जाऊंगी। तुम उस वक़्त मुझे पकड़ लेना। तब तुम्हें ज़्यादा फ़ायदा होगा।"

मछुए ने उसे जवाब दिया:

"वह तो कोई मूर्ख ही होगा जो हाथ में आई छोटी मछली को छोड़कर ज़्यादा फ़ायदे के लिये बड़ी का इन्तज़ार करेगा।"
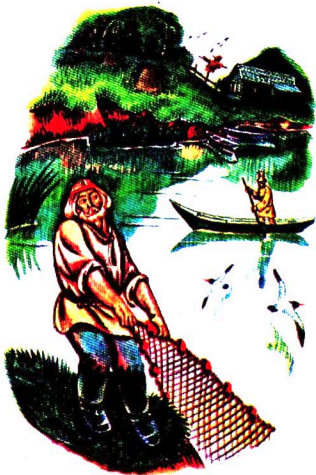
ख़रगोश और मेढक

एक बार ख़रगोश इकट्ठे हुए और अपनी बदक़िस्मती का रोना रोने लगे: "लोग, कुत्ते, उक़ाब और दूसरे जानवर भी हमें मार डालते हैं। लगातार डरते रहने और यातना सहने से तो यही ज्यादा अच्छा है कि हम एक बार ही मर जायें। आओ, सब डूब जायें।"

सभी ख़रगोश फुदकते हुए भील पर जा पहुंचे, ताकि डूब जायें। मेढकों ने ख़रगोशों की आवाजें सुनीं तो झटपट पानी में डुबकियां लगा लीं। तब एक ख़रगोश ने कहा: "ज़रा रुक जाओ, भाइयो! डूबने की जल्दी नहीं करो। मेढकों की जिन्दगी तो हमसे भी बुरी है -- वे तो हमसे भी डरते हैं।"

बाप और बेटे

एक बाप ने अपने बेटों को यह आदेश दिया कि वे हेल-मेल से रहें। लेकिन बेटों ने पिता की बात नहीं मानी। तब पिता ने उनसे एक झाड़ू लाने को कहा:

"तुम इसे तोड़ो!"

बेटे बहुत कोशिश करने पर भी उसे नहीं तोड़ पाये। तब पिता ने झाड़ू को खोल दिया और बेटों से कहा कि वे उसकी एक-एक टहनी या तिनकों को तोड़ डालें।

बेटों ने अलग-अलग तिनकों को बड़ी आसानी से तोड़ डाला। तब पिता ने कहा:

"तुम लोगों पर भी यही बात लागू होती है। अगर तुम सब मिल-जुलकर रहोगे तो कोई भी तुम्हें किसी तरह की हानि नहीं पहुंचा सकेगा। लेकिन अगर तुम आपस में लड़ो-झगड़ोगे या अलग हो जाओगे तो कोई भी तुम्हें आसानी से नष्ट कर डालेगा।"
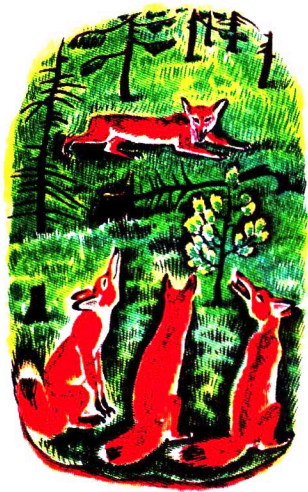
लोमड़ी

एक लोमड़ी फंदे में फंस गयी, उसकी दुम कट गयी, मगर वह ख़ुद बच निकली। वह सोचने लगी कि अपनी इस शर्म से कैसे निजात हासिल करे। उसने बाक़ी लोमड़ियों को जमा किया और उन्हें भी अपनी दुमें कटवा देने को प्रेरित करते हुए बोली:

"हमारी दुमें बिल्कुल बेकार हैं, हम तो फालतू वज़न लिये फिरती हैं।"

एक लोमड़ी ने जवाब दिया:

"अगर तू ख़ुद दुम कटी न होती तो ऐसा कभी न कहती।"

दुमकटी लोमड़ी कुछ भी जवाब न देकर वहां से चुपचाप चलती बनी।

मच्छर और शेर

एक मच्छर उड़ता हुआ शेर के पास पहुंचा और उससे बोला :

"शायद तुम यह समझते हो कि मुझसे ज्यादा ताक़तवर हो। यह तुम्हारी भूल है। तुम ज़रा भी ताक़तवर नहीं हो। तुम तो मर्दों से लड़नेवाली औरतों की तरह अपने पंजों

से किसी को खरोंच और दांतों से काट ही सकते हो। मैं तुमसे ज़्यादा ताक़तवर हूं। अगर चाहते हो तो आ जाओ मैदान में!"

मच्छर ने भनभनाना और शेर के गालों और नाक को काटना शुरू किया। शेर अपने मुंह पर पंजे और नाखून मारने लगा। उसने अपना सारा चेहरा लहू-लुहान कर लिया और बुरी तरह से थक गया।

मच्छर ने खुश होकर अपनी जीत का डंका बजाया और उड़ गया। कुछ समय बाद वह मकड़ी के जाले में फंस गया। मकड़ी उसे खाने लगी। तब मच्छर बोला:

"इतने ताक़तवर शेर को तो मैंने जीत लिया, मगर इस कमबख़्त मकड़ी के कारण मेरी जान जा रही है।"

कुत्ता और भेड़िया

एक कुत्ता अहाते में सो रहा था। कोई भूखा भेड़िया भागता हुआ यहां आया और उसने कुत्ते को खाना चाहा। कुत्ता बोला :

"भेड़िये! मुझे खाने की जल्दी नहीं करो। इस वक़्त मैं दुबला-पतला हूं, मेरी हड्डियां बाहर निकली हुई हैं। कुछ समय बाद मालिक लोगों के यहां शादी होनेवाली है। तब मुझे खूब खाने को मिलेगा, मैं मोटा हो जाऊंगा—तुम्हारे लिये मुझे तब खाना ज़्यादा अच्छा रहेगा।"

भेड़िये ने उसकी बात पर यक़ीन कर लिया और चला गया। कुछ दिनों बाद वह फिर से आया और उसने देखा कि कुत्ता छत पर लेटा हुआ है। भेड़िये ने पूछा :

"तो यहां शादी हो चुकी?"

कुत्ते ने जवाब दिया :

"सुनो, भेड़िये, अगर अगली बार मुझे अहाते में सोता पाओ तो तुम शादी का इन्तज़ार नहीं करना।"
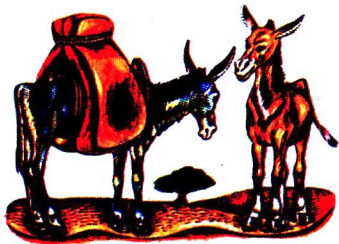
जंगली और पालतू गधा

एक जंगली गधा किसी पालतू गधे के पास गया और उसकी जिन्दगी की तारीफ़ करते हुए कहने लगा कि उसका बदन कितना मुलायम है और उसे कितना बढ़िया चारा मिलता है। कुछ देर बाद जब पालतू गधे पर बहुत-सा बोझ लाद दिया गया और मालिक उसे डंडे से हांकने लगा तो जंगली गधा बोला :

"नहीं, मेरे भाई, अब मुझे तुझसे ईर्ष्या नहीं हो रही है। मैं देख रहा हूं कि तुझे अपनी ऐसी जिन्दगी के लिये काफ़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है।"

घोड़ा और उसके मालिक

किसी बाग़बान के यहां एक घोड़ा था। उसे काम बहुत करना पड़ता, मगर चारा कम मिलता। वह भगवान से यह प्रार्थना करने लगा कि किसी दूसरे मालिक के पास चला जाये। भगवान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। बाग़बान ने अपना घोड़ा किसी कुम्हार को बेच दिया। घोड़ा बहुत खुश हुआ, लेकिन कुम्हार के यहां उसे पहले से भी ज्यादा काम करना पड़ता। घोड़ा फिर से अपनी क़िस्मत को कोसने और भगवान से विनती करने लगा कि उसे ज्यादा अच्छा मालिक मिल जाये। उसकी यह प्रार्थना भी स्वीकार कर ली गयी। कुम्हार ने यह घोड़ा चमड़ा कमानेवाले को बेच दिया। घोड़े ने जैसे ही चमड़ा कमानेवाले के अहाते में घोड़ों की खालें लटकती देखीं, वैसे ही वह दुखी होकर चीख़ने लगा:

"ओह, मेरी क़िस्मत फूट गयी! मैं अपने पहलेवाले मालिकों के पास रहता तो कहीं अच्छा होता। लगता है कि अब तो मुझे मेरी खाल उतारने के लिये बेचा गया है।"

भेड़िया और बकरी

एक भेड़िये ने चट्टानी पहाड़ी पर बकरी को चरते देखा। भेड़िये के लिये उसके क़रीब पहुंचना संभव नहीं था। सो उसने बकरी से कहा:

"तू नीचे क्यों नहीं आ जाती, यहां ज़मीन भी समतल है और घास भी ज्यादा मीठी है।"

बकरी ने उसे जवाब दिया:

"भेड़िये, तू मेरी भलाई के लिये मुझे नीचे नहीं बुला रहा है। तुझे मेरे चारे की नहीं, अपने पेट की फ़िक्र है।"

बारहसिंगा

एक बारहसिंगा पानी पीने के लिये नदी पर गया। पानी में अपनी परछाई देखकर वह अपने सींगों की प्रशंसा करने लगा कि वे इतने बड़े-बड़े और इतने फैले-फैले हैं। लेकिन टांगों को देखने पर कह उठा:

"मेरी टांगें भद्दी और पतली-पतली हैं।"

अचानक शेर आ गया और बारहसिंगे की ओर झपटा। बारहसिंगा खुले मैदान में चौकड़ियां भरने लगा। वह बच निकला, मगर जैसे ही जंगल में पहुंचा, उसके सींग शाखाओं में उलझ गये और शेर ने उसे दबोच लिया। मरते हुए बारहसिंगे ने कहा:

"मैं भी कैसा मूर्ख हूं। जिन टांगों को मैंने भद्दी और पतली-पतली कहा था, उन्होंने मुझे बचाया और जिन सींगों को देखकर खुश हुआ था, उन्होंने ही मुझे मरवा दिया।"
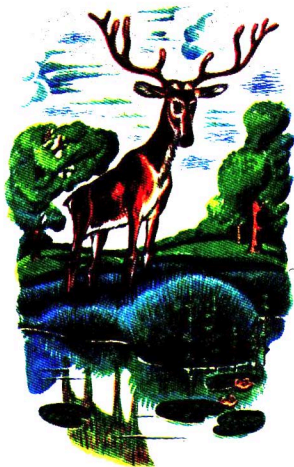
बारहसिंगा और अंगूरों का बगीचा

एक बारहसिंगा शिकारियों से बचने के लिये अंगूरों के बगीचे में छिप गया। जब शिकारी उसके क़रीब से आगे निकल गये तो बारहसिंगा अंगूरों के पौधों के पत्ते खाने लगा।

शिकारियों ने पत्ते हिलते देखे तो सोचने लगे: "पत्तों की ओट में जानवर तो नहीं छिपा हुआ है?" उन्होंने गोली चला दी और बारहसिंगा घायल हो गया।

वह दम तोड़ते हुए बोला:

"मैं इसी अन्त के लायक़ हूं, क्योंकि उन्हीं पत्तों को खाने लगा था जिन्होंने मेरी जान बचायी थी।"

बूढ़ा और मौत

किसी बूढ़े ने एक बार जंगल में लकड़ियां काटीं, उनका गट्ठा बनाया और घर ले चला। उसे बहुत दूर जाना था, वह बुरी तरह थक गया, उसने गट्ठा नीचे रख दिया और बोला:

"काश, मुझे मौत आ जाये।"

मौत उसके सामने आकर खड़ी हो गयी और बोली:

"मैं आ गयी, तुम क्या चाहते हो, बाबा?"

बूढ़ा डर गया और कहने लगा:

"तुम मेरा यह गट्ठा उठा ले चलो।"

शेर और लोमड़ी

एक शेर जब बूढ़ा हो गया तो वह जानवरों का शिकार नहीं कर पाता था। इसलिये उसने एक चालाकी सोची --वह गुफा में जाकर लेट गया और बीमार होने का ढोंग करने लगा। जानवर उसकी तबीयत का हालचाल पूछने के लिये गुफा में जाते और वह उन्हें खा जाता। लोमड़ी इस मामले को भांप गयी और गुफ़ा के बाहर ही खड़ी रहकर उसने पूछा:

"कैसी तबीयत है, शेर बादशाह?"

"बहुत बुरी है। लेकिन तुम अन्दर क्यों नहीं आ जातीं?"

लोमड़ी ने जवाब दिया:

"इसलिये अन्दर नहीं आती कि पैरों के निशानों से देख रही हूं—भीतर तो बहुत गये, मगर बाहर कोई नहीं आया।"

बिल्ला और चूहे

किसी घर में बहुत अधिक चूहे हो गये। इस घर में एक बिल्ला आ गया और चूहों को पकड़ने लगा। चूहों ने देखा कि उनका बुरा हाल हो रहा है और वे आपस में कहने लगे :

"भाइयो, हम अब छत से नीचे नहीं जायेंगे और बिल्ला यहां नहीं पहुंच सकेगा!"

चूहों ने जैसे ही नीचे जाना छोड़ दिया, वैसे ही बिल्ला यह सोचने लगा कि उनको कैसे चकमा दे। उसने एक चालाकी सोची। अपने एक पंजे से छत को पकड़कर वह नीचे की तरफ़ लटक गया और मुर्दा होने का ढोंग करने लगा। एक चूहा उसे ऐसे लटकता देखकर बोला :

"नहीं, मेरे भाई! तू चाहे बोरी ही क्यों न बन जाये, मैं तो फिर भी तेरे क़रीब नहीं आऊंगा।"
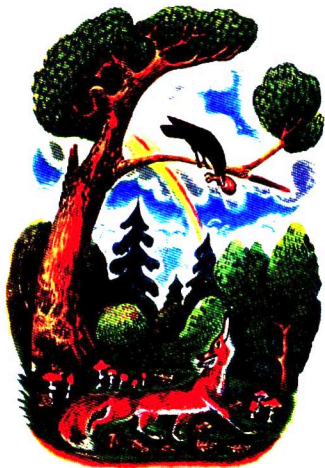
कौवा और लोमड़ी

एक कौवे ने कहीं से मांस का टुकड़ा हासिल कर लिया और उसे चोंच में दबाकर वृक्ष पर बैठ गया। एक लोमड़ी का भी मांस खाने को मन हुआ और वह पेड़ के क़रीब आकर बोली:

"अरे, कौवे, तुझे देखती हूं तो सोचती हूं कि तेरे जैसे क़द और सुन्दरतावाले को राजा होना चाहिये। अगर तेरे पास ज़ोरदार आवाज़ भी होती तो सचमुच ही राजा बन जाता।"

कौवे ने यह सुना तो मुंह खोलकर पूरे ज़ोर से कांय-कांय करने लगा। मांस का टुकड़ा नीचे गिर गया। लोमड़ी ने उसे उठा लिया और बोली:

"ओह, कौवे, अगर तेरे पास थोड़ी अक्ल भी होती तो तू सचमुच ही राजा बन जाता।"
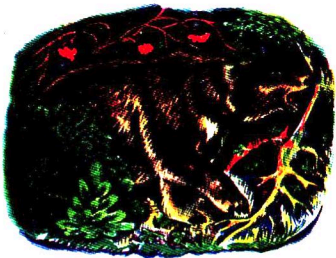
दो दोस्त

दो दोस्त जंगल में से जा रहे थे कि एक भालू सामने आ गया। दोनों में से एक तो भागकर पेड़ पर चढ़ गया और छिप गया, मगर दूसरा वहीं रह गया। उसके लिये जमीन पर लेटकर मुर्दा होने का ढोंग करने के सिवा कोई चारा नहीं था।

भालू इस लड़के के क़रीब आकर इसे सूंघने लगा---लड़के

ने तो सांस लेना भी बन्द कर दिया। भालू ने उसका मुंह सूंघा और यह मानकर कि मुर्दा है, आगे चला गया। भालू के जाने पर दूसरा लड़का पेड़ से नीचे उतरा और उसने हंसते हुए पूछा :

"तो भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा था?"

"उसने कहा था कि खतरे या मुसीबत के वक़्त जो लोग अपने साथियों को छोड़कर भाग जाते है, वे बुरे होते हैं।"

किसान और जल-प्रेत

किसी किसान का कुल्हाड़ा पानी में गिर गया। वह दुखी होता हुआ तट पर बैठकर रोने लगा।

जल-प्रेत ने किसान को रोते सुना तो उसे उस पर तरस आ गया। वह नदी में से सोने का कुल्हाड़ा लेकर बाहर आया और किसान से पूछने लगा:

"यह तुम्हारा कुल्हाड़ा है?"

किसान ने जवाब दिया:
"नहीं, यह मेरा नहीं है।"
जल-प्रेत दूसरा, चांदी का कुल्हाड़ा लेकर आया।
किसान ने फिर से जवाब दिया:
"नहीं, यह मेरा नहीं है।"
तब जल-प्रेत असली कुल्हाड़ा लेकर आया।
किसान ने कहा:
"हां, यह कुल्हाड़ा मेरा है।"
जल-प्रेत ने सच बोलने के लिये किसान को तीनों कुल्हाड़े दे दिये।

घर लौटकर किसान ने अपने साथियों को तीनों कुल्हाड़े दिखाये और सारा क़िस्सा सुनाया।

एक अन्य किसान ने भी ऐसा ही करने का इरादा बना लिया। वह नदी पर गया, उसने जान-बूझकर अपना कुल्हाड़ा नदी में गिरा दिया और तट पर बैठकर रोने लगा।

जल-प्रेत सोने का कुल्हाड़ा लेकर पानी से बाहर आया और उसने किसान से पूछा:
"तुम्हारा है यह कुल्हाड़ा?"
किसान बेहद खुश होकर चिल्ला उठा:
"हां, मेरा है, मेरा है!"
जल-प्रेत ने उसे झूठ बोलने की सजा देते हुए न सिर्फ़ सोने का, बल्कि उसका अपना कुल्हाड़ा भी नहीं दिया।

भेड़िया और मेमना

किसी भेड़िये ने देखा कि एक मेमना नदी पर पानी पी रहा है।

भेड़िये ने उसे खाना चाहा और इसलिये उससे झगड़ा करने लगा:

"तू पानी को गन्दा कर रहा है, मुझे पीने नहीं दे रहा।"

मेमने ने जवाब दिया:

"ओह, भेड़िये, मैं पानी को कैसे गन्दा कर सकता हूं? मैं तो गहरे पानी में खड़ा हूं और उसे होंठों से छू ही रहा हूं।"

लेकिन भेड़िया उसे दोषी ठहराने के लिये यह बोला:

"पिछली गर्मी में तूने मेरे बाप के साथ क्यों झगड़ा किया था?"

मेमने ने उत्तर दिया:

"पिछली गर्मी में तो मैं पैदा ही नहीं हुआ था।"

भेड़िये को गुस्सा आ गया और वह कह उठा:

"तेरे पास तो हर बात का जवाब तैयार है। लेकिन मुझे भूख लगी है और इसलिये मैं तुझे खा जाता हूं।"
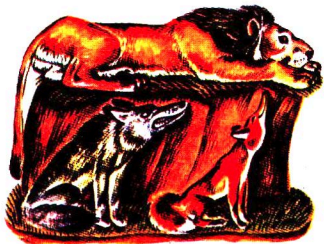
शेर, भेड़िया और लोमड़ी

एक बूढ़ा और बीमार शेर गुफा में लेटा हुआ था। सभी जानवर शेर का हाल-चाल पूछने आते थे, सिर्फ़ लोमड़ी ही नहीं आयी। भेड़िये को ऐसा मौक़ा मिलने से ख़ुशी हुई और वह शेर के सामने लोमड़ी की बुराई करने लगा :

"वह तो तुम्हें ज़रा भी महत्त्व नहीं देती, एक बार भी अपने बादशाह की तबीयत का हाल पूछने नहीं आयी।"

भेड़िया जब यह कह रहा था, उसी वक़्त लोमड़ी आ गयी। उसने भेड़िये के शब्द सुन लिये और मन में सोचा: "ज़रा सब्र कर, भेड़िये, मैं अभी तुझसे बदला लेती हूं, बच्चू।"

लोमड़ी को देखते ही शेर दहाड़ उठा, लेकिन लोमड़ी ने उससे कहा:

"मेरी जान लेने से पहले मुझे कुछ कह लेने दीजिये, हुज़ूर! मैं इसलिये नहीं आयी कि मुझे वक़्त नहीं मिला और वक़्त इसलिये नहीं मिला कि मैं डाक्टरों-हकीमों से यह पूछने को दुनिया भर में भागती रही कि आप किस तरह स्वस्थ हो सकते हैं। अभी-अभी मुझे आपका इलाज मालूम हुआ है और मैं भागती हुई आपके पास आयी हूं।"

शेर ने पूछा:

"क्या इलाज बताया है डाक्टरों ने?"

"उन्होंने बताया है कि जिन्दा भेड़िये को मारकर उसकी खाल को ठण्डी होने से पहले ही आपको उसे अपने बदन पर लपेट लेना चाहिये।"

शेर जैसे ही भेड़िये के टुकड़े-टुकड़े करने लगा, वैसे ही लोमड़ी हंसी और बोली:

"तू इसी के लायक़ था, मेरे भाई! शासकों को बुराई करने को नहीं, बल्कि भलाई करने को प्रोत्साहित करना चाहिये।"

शेर, गधा और लोमड़ी

शेर, गधा और लोमड़ी शिकार को गये। उन्होंने बहुत-से जानवर मार डाले और तब शेर ने गधे से उन्हें बांटने को कहा। गधे ने उन्हें तीन बराबर हिस्सों में बांट दिया और बोला:

"अब अपना-अपना हिस्सा ले लो!"

शेर आग-बबूला हो उठा, गधे को खा गया और उसने लोमड़ी से जानवरों को बांटने को कहा। लोमड़ी ने सभी जानवरों का एक ढेर बना दिया और अपने लिये उनका बहुत थोड़ा-सा हिस्सा रख लिया। शेर ने यह देखा और बोला:

"बड़ी समझदार है तू तो! किसने तुझे ऐसे अच्छे ढंग से बटवारा करना सिखाया है?"

लोमड़ी ने जवाब दिया:

"गधे का जो हाल हुआ है, वह तो मैंने देखा था।"

सरकंडा और ज़ैतून का पेड़

सरकंडे और ज़ैतून के पेड़ में यह बहस हो गयी कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा मज़बूत और ताक़तवर है। ज़ैतून के पेड़ ने सरकंडे का मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा कि वह तो हवा का हर झोंका आने पर झुक जाता है। सरकंडा ख़ामोश रहा। ज़ोर की आंधी आयी—सरकंडा ख़ूब हिलता-डुलता, दायें-बायें होता और ज़मीन तक झुकता रहा—इस तरह बच गया। ज़ैतून के पेड़ ने अपनी शाखाओं को आंधी के ख़िलाफ़ अकड़ा लिया और इस तरह टूट गया।

बिल्ली और भेड़ा

कहीं एक किसान रहता था। उसके पास एक बिल्ली और एक भेड़ा था। किसान जब काम से घर लौटता तो बिल्ली भागकर उसके पास जाती, उसका हाथ चाटती, उसकी पीठ पर कूदती और उसके साथ अपना तन रगड़ती। किसान उसे सहलाता और उसे खाने को रोटी देता।

भेड़े का मन हुआ कि उसे भी इसी तरह सहलाया जाये और रोटी खिलाई जाये। एक दिन जब किसान खेत से लौटा, तो भेड़ा भागता हुआ उसके पास गया, उसने उसका हाथ चाटा, उसकी टांगों से अपना तन रगड़ा। किसान को यह सब मज़ाक़-सा लगा और वह यह इन्तज़ार करने लगा कि आगे क्या होगा। भेड़ा पीछे से आया, पिछली टांगों पर खड़ा होकर वह किसान की पीठ पर कूदा। किसान ज़मीन पर गिर पड़ा।

किसान के बेटे ने जब यह देखा कि भेड़े ने उसके पिता को नीचे गिरा दिया है तो कोड़ा लिया और भेड़े की कसकर पिटाई की।

ख़रगोश

एक ख़रगोश कुत्तों से बचकर जंगल में भाग गया। जंगल में उसे चैन मिला, लेकिन चूंकि बहुत ज़्यादा डर गया था, इसलिये उसने और भी अधिक अच्छी तरह से छिप जाना चाहा। वह कोई और भी गहरी जगह ढूंढने लगा, एक खड्ड में पेड़ों के झुरमुट में घुस गया, मगर वहां एक भेड़िया छिपा हुआ था जिसने उसे दबोच लिया। "शायद यह ठीक ही कहा जाता है," ख़रगोश ने सोचा, "कि जो है, उसी से सब्र करना चाहिये। मैं ज़्यादा अच्छी तरह से छिपना चाहता था, इसलिये मारा ही गया।"

ख़रगोश और कछुआ

एक ख़रगोश और कछुए में बहस हो गयी कि कौन ज्यादा तेज़ दौड़ता है। उन्होंने डेढ़ किलोमीटर तक दौड़ लगाने का फ़ैसला किया। ख़रगोश तो फ़ौरन ही कछुए से आगे निकल गया "मुझे उतावली करने की क्या ज़रूरत है? मैं थोड़ी देर बैठकर आराम कर सकता हूं।" वह बैठ गया और उसे नींद आ गयी। लेकिन कछुआ लगातार रेंगता रहा, रेंगता रहा और जब ख़रगोश की आंख खुली तो कछुआ डेढ़ किलोमीटर तक की मंज़िल तय भी कर चुका था।

बटेरी और उसके बच्चे

एक बटेरी जई के खेत में अपने बच्चों को पाल रही थी और लगातार चिन्तित रहती थी कि खेत का मालिक कहीं फ़सल की कटाई न शुरू कर दे। वह दाना-दुनका चुनने के लिये जाते वक़्त अपने बच्चों से बहुत ध्यान से लोगों की बातें सुनने को कह जाती।

एक शाम को बटेरी लौटी तो बच्चों ने उसे बताया :

"बुरी ख़बर है, मां। मालिक अपने बेटे के साथ आया था और उसने कहा था : 'हमारी जई की फ़सल पक गयी और अब उसे काटना चाहिये। तुम हमारे पड़ोसियों और दोस्त-मित्रों के पास जाकर उनसे कह आओ कि मैं उनसे फ़सल काटने के लिये आने की प्रार्थना करता हूं।' यह तो बहुत बुरी बात है। मां, हमें कहीं और ले जाओ, क्योंकि कल सुबह ही मालिक के पड़ोसी फ़सल काटने आ जायेंगे।"

बूढ़ी बटेरी ने यह सुना और बोली :

"फ़िक्र की कोई बात नहीं है, बच्चो! तुम इतमीनान से यहां बैठे रहो, अभी कुछ समय तक फ़सल नहीं कटेगी।"

अगले दिन वह फिर तड़के ही उड़ गयी और बहुत ध्यान से मालिक की बातचीत सुनने को कह गयी। बूढ़ी बटेरी जब शाम को लौटी तो बच्चों ने उसे बताया:

"मालिक फिर से आया था। वह दोस्त-मित्रों और पड़ोसियों का इन्तज़ार करता रहा, मगर कोई भी नहीं आया। उसने बेटे से कहा: 'तुम अपने भाइयों, बहनोइयों और रिश्तेदारों के यहां जाकर कह आओ कि पिता जी ने जई की फ़सल कटवाने के लिये कल आने का अनुरोध किया है।'"

"तुम कोई चिन्ता नहीं करो, बच्चो, कल भी फ़सल नहीं काटी जायेगी," बूढ़ी बटेरी ने कहा।

अगले दिन फिर लौटने पर उसने बच्चों से पूछा:

"आज क्या हुआ, बच्चो?"

"मालिक आज फिर बेटे के साथ आया था। वे दोनों रिश्तेदारों का इन्तज़ार करते रहे, मगर कोई नहीं आया। तब उसने बेटे से कहा: 'लगता है कि हमें किसी की भी मदद की आशा नहीं करनी चाहिये। जई पक गयी है। तुम हंसिये तैयार कर लो। कल तड़के हम ख़ुद ही फ़सल काटने आयेंगे।'"

"तो बच्चो," बटेरी बोली, "अगर दूसरों की मदद का इन्तज़ार किये बिना आदमी ख़ुद ही अपना काम करने को तैयार हो जाता है तो वह उसे कर ही लेगा। अब हमें यहां से जाना चाहिये।"

मोर

एक बार पक्षी अपना ज़ार यानी राजा चुनने के लिये जमा हुए। मोर ने अपने पंख फैला लिये और अपने को ज़ार कहने लगा। सभी पक्षियों ने उसकी सुन्दरता के लिये उसे ज़ार चुन लेना चाहा। तभी मैना बोली :

"मोर, तुम हमें यह बताओ कि बाज़ जब हम पर झपटेगा तो ज़ार बन जाने पर तुम उससे हमारी रक्षा कैसे करोगे?"

मोर को कोई जवाब नहीं सूझा। सभी पक्षी सोचने लगे कि मोर को ज़ार चुन लेना ठीक होगा या नहीं। उन्होंने मोर के बजाय उक़ाब को अपना ज़ार चुना।

भालू और मधुमक्खियां

एक भालू हर दिन मधुमक्खियों के छत्ते पर आ जाता
और वहां से शहद अपने घर ले जाता।
एक दिन सभी मक्खियां उड़ीं और नाक पर झपटीं,
ज़ोर-ज़ोर से काटें उसको, सभी नाक से लिपटीं।
"हाय, नाक का अब क्या होगा?" भालू यह चिल्लाये,
और न रुके बिना पल भर को घर को भागा जाये।

मधुमक्खियां और नरमधुमक्खियां

गर्मी के आते ही मधुमक्खियां के नर इस बात पर उनसे लड़ने लगे कि उनमें से कौन शहद खायेगा। मधुमक्खियों ने ततैये को इस झगड़े का फ़ैसला करने को बुलाया। ततैया बोला:

"मैं फ़ौरन इस झगड़े का फ़ैसला नहीं कर सकता। मुझे यह मालूम नहीं कि तुममें से कौन शहद बनाता है। तुम दो अलग छत्तों में चले जाओ--एक में मादा मधुमक्खियां और दूसरे में नर। एक हफ़्ते बाद मैं यह देखूंगा कि तुममें से कौन ज़्यादा और अच्छा शहद बनाता है।"

नर झगड़ने लगे: "नहीं, हम सहमत नहीं हैं," उन्होंने कहा। "तुम अभी इसका फ़ैसला करो।"

ततैया बोला: "अच्छी बात है, मैं अभी इसका फ़ैसला कर देता हूं। तुम नर इसलिये सहमत नहीं हो कि शहद बनाना नहीं जानते और सिर्फ़ पराया शहद खाना ही पसन्द करते हो। मधुमक्खियो, तुम इन निठल्लों को दूर भगा दो।"

और मधुमक्खियों ने उन्हें खदेड़ दिया।

मोर और सारस

एक मोर और सारस में बहस हो गयी कि उनमें से कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है। मोर बोला:

"मैं सभी पक्षियों से अधिक सुन्दर हूं। मेरी पूंछ में इन्द्रधनुष के सभी रंग चमकते हैं, जबकि तू भूरा-भूरा और भद्दा है।"

सारस ने जवाब दिया:

"लेकिन मैं ऊंचे आकाश में उड़ता हूं और तू गन्दे अहाते में घूमता है।"

बटेर और शिकारी

एक बटेर किसी शिकारी के जाल में फंस गया और उसकी मिन्नत-समाजत करने लगा कि वह उसे छोड़ दे।

"तुम मुझे आज़ाद कर दो," वह बोला, "मैं तुम्हारे काम आऊंगा। मैं दूसरे बटेरों को तुम्हारे जाल में ला फंसाऊंगा।"

"सुन रे, बटेर," शिकारी बोला, "मैंने तो यों भी तुझे न छोड़ा होता और अब बिल्कुल नहीं छोड़ूंगा। मैं तो सिर्फ़ इसलिये ही तेरी गर्दन मरोड़ दूंगा कि तू अपने भाइयों के साथ गद्दारी करना चाहता है।"

चिड़िया

किसी चिड़िया ने देखा कि आदमी सन बोने जा रहा है। वह उड़कर दूसरे पक्षियों के पास गयी और बोली: "पक्षियो, सन के बीज खाने के लिये जल्दी से उडकर मेरे साथ चलो। जब सन के पौधे बड़े हो जायेंगे तो आदमी उनसे धागे बनायेगा, धागों से जाल बुनेगा और हमें पकड़ेगा।" पक्षियों ने चिड़िया की बात नही सुनी और वह अकेली तो सारे बीज नहीं खा सकी। सन के पौधों पर फूल आ गये। चिड़िया ने फिर पक्षियों से इन फूलों को नष्ट करने के लिये चलने को कहा, ताकि उन्हें बाद में मुसीबत का मुंह न देखना पड़े। पक्षियों ने इस बार भी उसकी बात पर कान नही दिया। सन के बोंड़े निकल आये। चिड़िया ने तीसरी बार पक्षियों से उन्हें नष्ट कर डालने को कहा। पक्षियों ने तीसरी बार भी उसकी बात अनसुनी कर दी। तब चिड़िया पक्षियों से नाराज हो गयी, उन्हें छोड़कर उड़ गयी और लोगों के साथ रहने लगी।

बाज़ और कबूतर

एक बाज़ कबूतरों का पीछा करता रहा, करता रहा, मगर उसे एक भी कबूतर पकड़ पाने में सफलता नहीं मिली। तब उसने उनको धोखा देने की तरकीब सोची। वह कबूतरों के दरबे के क़रीब एक पेड़ पर जा बैठा और उनसे कहने लगा कि वह उनकी सेवा करना चाहता है।

"मेरे पास तो कोई काम-काज नहीं है," वह बोला, "और मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं। तुम मुझे अपने दरबे में आ जाने दो, मुझे अपना ज़ार बना लो और तब मैं तुम्हारा सेवक बनकर रहूंगा। न सिर्फ़ मैं खुद तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं करूंगा, बल्कि किसी दूसरे को भी तुम्हारे साथ कोई ज्यादती नहीं करने दूंगा।"

कबूतर राज़ी हो गये और उन्होंने बाज़ को अपने दरबे में आ जाने दिया। दरबे में आ जाने के बाद बाज़ दूसरी ही बोली बोलने लगा।

"मैं तुम्हारा ज़ार हूं और तुम्हें मेरी हर बात माननी चाहिये। सबसे पहली बात तो यह है कि मुझे अपने खाने के लिये हर दिन एक कबूतर चाहियेगा।"

और वह हर दिन एक कबूतर खाने लगा। कबूतर बेहद दुखी होकर सोचने लगे कि वे क्या करें। लेकिन देर हो चुकी थी।

"इसे तो दरबे में आने ही नहीं देना चाहिये था," वे बोले। "मगर अब तो कुछ भी नहीं हो सकता।"

मालिक और नौकर

किसी घर में बहुत-से लोग शादी के मौक़े पर जमा हुए। पड़ोसी ने अपने नौकर को बुलाकर कहा:

"जाकर यह देखो कि शादी में कितने लोग आये हैं।"

नौकर गया, उसने रास्ते में एक लट्ठा रख दिया और पुश्ते पर बैठकर यह इन्तज़ार करने लगा कि कब लोग घर से बाहर निकलते हैं।

लोग बाहर आने लगे। जो भी बाहर आता, लट्ठे से ठोकर खाता, बुरा-भला कहता और आगे चल देता। सिर्फ़ एक बुढ़िया ही ऐसी बाहर आयी जो लट्ठे से ठोकर खाकर वापस लौटी और उसने उसे उठाकर एक तरफ़ कर दिया।

नौकर अपने मालिक के पास लौटा। मालिक ने पूछा:

"बहुत लोग आये थे क्या वहां?"

नौकर ने जवाब दिया:

"सिर्फ़ एक ही, और वह भी बुढ़िया।"

"भला यह कैसे हो सकता है?"

"इसलिये कि मैंने रास्ते में लकड़ी का एक लट्ठा फेंक दिया था, सभी उससे ठोकर खाकर गिरते रहे, मगर किसी ने भी उसे उठाकर एक तरफ़ नहीं किया। भेड़ें भी ऐसा ही करती हैं। केवल एक बुढ़िया ने उसे उठाकर एक तरफ़ को कर दिया, ताकि दूसरे लोग न गिरें। ऐसा असली इन्सान करते हैं। सिर्फ़ वही इन्सान है।"

हंडिया और कड़ाही

हंडिया और कड़ाही में झगड़ा हो गया। हंडिया ने कड़ाही को यह धमकी दी कि वह उस पर चोट करेगी।

"इससे फ़र्क ही क्या पड़ता है," कड़ाही ने जवाब दिया, "कि तू मुझ पर चोट करेगी या मैं तुझ पर। हर हालत में तू ही टूटेगी।"

चमगादड़

बहुत पुराने ज़माने में जानवरों और पक्षियों के बीच ज़ोर की लड़ाई हुई। चमगादड़ ने न तो जानवरों और न पक्षियों का साथ दिया, बल्कि इस इन्तज़ार में रहा कि कौनसा पक्ष जीतता है।

शुरू में पक्षी जानवरों पर विजयी होने लगे तो चमगादड़ उनके साथ हो गया, उनके साथ उड़ता रहा और अपने को पक्षी कहता रहा। लेकिन बाद में जब जानवरों की जीत होने लगी तो चमगादड़ उनके साथ जा मिला। उसने उन्हें अपने दांत और पंजे दिखाये और यक़ीन दिलाया कि वह जानवर है तथा जानवरों को प्यार करता है। आख़िर में पक्षी जीत गये और चमगादड़ फिर से उनके पास पहुंचा। लेकिन पक्षियों ने उसे खदेड़ दिया।

चमगादड़ अब जानवरों के पास भी नहीं जा सकता था। तब से चमगादड़ तहख़ानों और पेड़ों के कोटरों में रहता है, सिर्फ़ शामों को ही बाहर निकलता है और न तो जानवरों और न पक्षियों के ही साथ रहता है।

कंजूस

किसी कंजूस आदमी ने रुपयों की तिजोरी भर ली, उसे ज़मीन में गाड़ दिया और वह हर दिन चोरी-छिपे उसे देखने जाता। उसके नौकर ने उसे ऐसा करते देख लिया और रात को वहां जाकर तिजोरी चुरा ली। कंजूस आदमी तिजोरी को देखने गया और उसे वहां न पाकर रोने लगा। पड़ोसी ने उसे रोते देखकर कहा :

"तुम किसलिये रो रहे हो? तुम रुपयों का कोई उपयोग तो करते नहीं थे। अब उस गढ़े को देखने जाते रहा करो, जहां तिजोरी में रुपये दबे हुए थे। तुम्हारे लिये यह एक ही बात होगी।"

आदमी और कुत्ता

एक कुत्ता कुएं में गिर गया। आदमी ने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन कुत्ते ने उसे काट लिया। आदमी ने उसे कुएं में वापस फेंक दिया और बोला:

"मैं तेरी जान बचाना चाहता था और इसके बदले में अगर तू मुझे काट ही सकता है तो कुएं में ही पड़ा रह।"
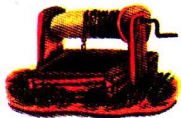
कुत्ता और छड़ी

एक कुत्ता मुर्गियों का पीछा करने लगा। उसके मालिक ने उसके गले में एक छड़ी बांध दी, ताकि वह मुर्गियों का शिकार न कर सके। तब कुत्ता सारे अहाते में यह छड़ी दिखाता और सबसे यह कहता फिरता रहा :

"देखो तो मेरा मालिक मुझे कितना अधिक प्यार करता है। दूसरे कुत्तों से मुझे अलग करने के लिये उसने मेरे गले में छड़ी बांध दी है।"

चरवाहा

किसी चरवाहे की एक भेड़ गुम हो गयी। वह ढूंढ़ता रहा, ढूंढ़ता रहा, मगर भेड़ उसे कहीं नहीं मिली। वह प्रार्थना करने लगा और उसने भगवान को यह वचन दिया कि अगर उसे चोर मिल जायेंगे तो वह गिरजे में जाकर दस कोपेक की मोमबत्ती जलायेगा। अगले दिन वह जंगल में गया और वहां

उसे भेड़िये दिखाई दिये। वे उसकी भेड़ का बचा-बचाया मांस खा रहे थे। चोर तो अब उसके सामने थे। लेकिन जैसे ही भेड़िये उस पर झपटे, वैसे ही वह भगवान का नाम जपता हुआ यह वचन देने लगा कि अगर भेड़िये उसकी जान नहीं लेंगे तो वह गिरजे में जाकर एक रूबल की मोमबत्ती जलायेगा।

सूखी घास पर कुत्ता

एक कुत्ता सायबान में सूखी घास पर लेटा हुआ था। एक गाय का घास खाने को मन हुआ, वह सायबान में गयी, उसने सूखी घास के ढेर के पास जाकर उसमें अपना सिर घुसेड़ दिया और जैसे ही घास से मुंह भरा, वैसे ही कुत्ता गुर्राते हुए उस पर झपटा। गाय वहां से दूर हट गयी और बोली :

"न तो खुद खाता है और न मुझे ही खाने देता है।"

भेड़िया और हड्डी

एक भेड़िया मुंह में हड्डी लिये जा रहा था। कुछ पिल्ले भौंकते हुए उसका पीछा करने लगे। भेड़िया उनके टुकड़े-टुकड़े कर सकता था, लेकिन वह अपना मुंह खोलना और हड्डी को नीचे नहीं गिराना चाहता था। इसलिये वह पिल्लों से दूर भाग गया।

कुत्ता और चोर

रात के वक़्त एक चोर किसी अहाते में घुस गया। कुत्ता उसकी आहट पाकर भौंकने लगा। चोर ने रोटी का टुकड़ा निकालकर कुत्ते के सामने फेंक दिया। कुत्ते ने रोटी की तरफ़ ध्यान नहीं दिया, चोर पर झपटा और उसकी टांग को काटने लगा।

"अरे, तू किसलिये मुझे काट रहा है? मैं तो तुझे रोटी दे रहा हूं," चोर ने कहा।

"इसलिये काट रहा हूं कि जब तक तूने मेरे सामने रोटी नहीं फेंकी थी, मैं यह नहीं जानता था कि तू अच्छा या बुरा आदमी है। लेकिन अब जब तू मुझे रिश्वत देना चाहता है तो मैं यक़ीनी तौर पर जानता हूं कि तू बुरा आदमी है।"

भेड़िया और घोड़ी

किसी भेड़िये ने एक बछेरे को खाना चाहा। वह घोड़ों के झुंड के पास गया और बोला:

"क्या बात है कि तुम्हारा एक बछेरा लंगड़ाता है? शायद तुम्हें उसका इलाज करना नहीं आता? हम भेड़ियों के पास एक ऐसी दवाई है कि कभी कोई लंगड़ायेगा ही नहीं।"

एक घोड़ी ने पूछा:

"तो तू इलाज करना जानता है?"

"बेशक जानता हूं।"

"ज़रा मेरी पिछली दायीं टांग का इलाज कर दे, मेरे सुम में दर्द हो रहा है।"

भेड़िया घोड़ी के क़रीब गया और जैसे ही वह उसकी पिछली टांग के नज़दीक हुआ, वैसे ही उसने ऐसे ज़ोर से उसे लात मारी कि उसके सारे दांत टूट गये।
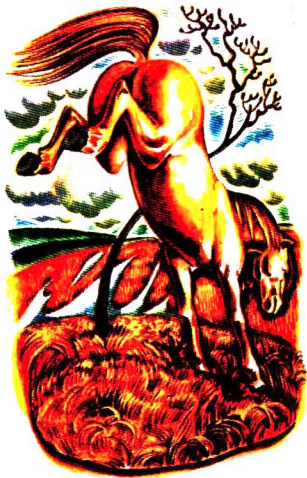
लोमड़ी और भेड़िया

किसी लोमड़ी ने एक भेड़िये को अपने दांत तेज़ करते देखा। लोमड़ी बोली:

"तू किसलिये दांत तेज़ कर रहा है? लड़ने को तो कोई सामने है ही नहीं।"

भेड़िये ने जवाब दिया:

"जब तक लड़ने को कोई नहीं है, तब तक ही मैं अपने दांत तेज़ कर सकता हूं। लड़ने का वक़्त आने पर दांत तेज़ करने की फ़ुरसत ही कहां होगी।"

हिरन और घोड़ा

एक हिरन ने सींग मार-मारकर घोड़े को मैदान से निकाल दिया। घोड़ा आदमी के पास गया और उसने उससे यह विनती की कि वह उसकी मदद करे। आदमी ने उसकी मदद की, हिरन को भगा दिया, लेकिन साथ ही घोड़े को लगाम डालकर उस पर ज़ीन कस दिया। हिरन के भगा दिये जाने पर घोड़ा बोला:

"मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं, इन्सान। अब तुम मुझे छोड़ दो।"

लेकिन इन्सान ने जवाब दिया:

"नहीं, मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा। अब तो मैं यह जान गया हूं कि तू मेरे कितना अधिक काम आ सकता है।"

और उसने घोड़े को नहीं छोड़ा।

दो मेढक

गर्मी से सारे तालाब और दलदल सूख गये। दो मेढक पानी की तलाश में गये, फुदककर कुएं की मेंड़ पर बैठ गये और सोचने लगे कि कुएं में कूदें या न कूदें। जवान मेढक बोला:

"हमें कूद जाना चाहिये। वहां पानी बहुत है और वहां हमें परेशान भी कोई नहीं करेगा।"

लेकिन दूसरे मेढक ने जवाब दिया:

"नहीं, हमें नहीं कूदना चाहिये। पानी तो शायद वहां बहुत है, लेकिन अगर कुआं सूख गया तो हम वहां से बाहर तो नहीं निकल सकेंगे।"

मादा-भेड़िया और सूअर

एक मादा-भेड़िया ने सूअर से अनुरोध किया कि वह उसे अपने यहां रात बिता लेने दो। सूअर ने उसे ऐसा करने दिया। उसी रात मादा-भेड़िया ने बच्चे दे दिये। कुछ समय बाद सूअर ने अपनी जगह ख़ाली करने को कहा।

"तुम तो देख ही रहे हो कि बच्चे छोटे हैं, थोड़ा इन्तज़ार करो," मादा-भेड़िया ने उत्तर दिया।

सूअर ने सोचा: "ठीक है, थोड़ा इन्तज़ार कर लेता हूं।"

गर्मी बीत गयी, सूअर अपनी जगह ख़ाली करने को कहने लगा। मादा-भेड़िया ने जवाब दिया:

"तुम हमें छूने तक की हिम्मत तो करके देखो। हम छः हैं, तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

सांड़ और मेढकी

एक सांड़ झील के पास चला गया। वहां मेढक-मेढकियां थे। एक मेढक को तो उसने कुचल भी डाला और बाक़ी पानी में भाग गये। एक मेढकी का बच्चा अपनी मां के पास गया और बोला :

"ओह, मां, कितना बड़ा जानवर देखा है मैंने--दिल में दहशत पैदा करता है।"

"क्या मुझसे भी बड़ा है?" मां ने पूछा।

"कहीं बड़ा।"

बूढ़ी मेढकी ने अपने को फुला लिया और पूछा :

"क्या वह अब भी मुझसे बड़ा है?"

"हां, बड़ा है।"

मेढकी ने अपने को और फुला लिया।

"क्या वह अब भी मुझसे बड़ा है?"

"हां, बड़ा है। अपने को फुलाते हुए बेशक फट जाओ, लेकिन सांड़ के बराबर नहीं हो सकेगी।"

बूढ़ी मेढकी ने पूरा ज़ोर लगाकर अपने को फुलाया और फट गयी।

ज़ार के लिये प्रार्थना करनेवाले मेढक

मेढक आपस में लड़ने-झगड़ने लगे, मगर उनका फ़ैसला करनेवाला कोई नहीं था। वे भगवान से प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें ज़ार दे दे। इसी वक़्त क्या हुआ कि एक टहनी टूटकर पानी में आ गिरी।

"यह आ गया हमारे लिये ज़ार," मेढकों ने कहा और डरकर वहां से भाग गये। लेकिन टहनी कीचड़ में जिस तरह से आ गिरी थी, उसी तरह से पड़ी हुई थी। मेढकों की हिम्मत बढ़ी, वे तैरते और फुदकते हुए टहनी के पास पहुंचने लगे। टहनी हिले-डुले बिना उसी तरह पड़ी थी। मेढकों ने देखा कि उनका ज़ार बहुत शान्त है, उनके झगड़े का कोई फ़ैसला नहीं करता है और वे फिर से ज़ार के लिये भगवान से प्रार्थना करने लगे। संयोग से इसी वक़्त एक बगुला झील के क़रीब से उड़ता हुआ जा रहा था और वह झील के तट पर बैठ गया। मेढक खुश होकर कह उठे: "यह असली जीता-जागता ज़ार आ गया है। यह हमारा फ़ैसला कर देगा।"

लेकिन जैसे ही बगुला एक-एक मेढक को पकड़कर खाने लगा, वैसे ही उन्हें अपने पहले, शान्त ज़ार के बारे में अफ़सोस होने लगा।

दुकानदार और चोर

दो आदमी दुपट्टे खरीदने के लिये एक दुकान पर गये।

दुकानदार ने अपना माल देखने के लिये मुंह फेरा और जब फिर से ग्राहकों की तरफ़ देखा तो एक दुपट्टा गायब पाया। दुकानदार ने इन दोनों व्यक्तियों को रोककर कहा:

"तुममें से एक ने मेरा दुपट्टा ले लिया है।"

एक व्यक्ति ने भगवान की क़सम खाकर कहा कि उसके पास दुपट्टा नहीं है और दूसरे ने क़सम खाकर यह कहा कि उसने दुपट्टा नहीं लिया है। तब दुकानदार बोला:

"तुम दोनों ही चोर हो।"

दुकानदार ने अनुमान लगा लिया कि एक ने दुपट्टा उठाकर दूसरे को दे दिया है और उस चोर की तलाशी ली जिसने क़सम खाकर यह कहा था कि उसने दुपट्टा नहीं लिया है। दुकानदार को उसके पास से दुपट्टा मिल गया और वह दोनों चोरों को थाने में ले गया।

सूरज और हवा

एक बार सूरज और हवा में यह बहस हो गयी कि उनमें से कौन एक आदमी के कपड़े पहले उतरवाने में सफल होता है। हवा ने अपना ज़ोर आज़माना शुरू किया। वह आदमी के कपड़े और टोपी को उड़ाने लगी। लेकिन आदमी ने तो अपनी टोपी को और अधिक नीचे कर लिया तथा पोशाक के बटन बन्द कर लिये। इस तरह हवा को कामयाबी नहीं मिली। तब सूरज कोशिश करने लगा। उसने धूप को तेज़ किया तो आदमी ने पोशाक के सारे बटन खोल दिये और टोपी पीछे हटा दी। धूप के कुछ और तेज़ होने और गर्मी बढ़ने पर इस आदमी ने टोपी तथा कपड़े उतार दिये।